# लखनऊ के कश्मीरी पंडित

भारत के नक्शे में सबसे ऊपर यानि सिर की जगह जो राज्य है, उसका नाम कश्मीर है। दुर्भाग्यवश पिछले 15.20 सालों से कश्मीर की चर्चा हत्या, हिंसा और आतंकवाद के प्रसंग में ही की जाती रही है, इसलिए हमारे देश की नई पीढ़ी यह नहीं जानती कि कश्मीर केवल नकशे में ही भारत का मस्तक नहीं है, वह ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, दर्शन और कला के महान् केन्द्र के रूप में सदियों भारत का गौरव रहा है। इसी कारण सरस्वती या शारदा की एक प्रार्थना में कहा गया है –

नमस्ते शारदादेवी
कश्मीरपुरवासिनी

''हे कश्मीर में निवास करनेवाली शारदादेवी, तुम्हें प्रणाम है।'' किसी युग में कश्मीर की प्रतिष्ठा शारदापीठ के रूप में थी। यहाँ निवास करनेवाले ब्राह्मण समुदाय में, जिसे कश्मीरी पंडित कहा जाता है, एक से एक बढ़कर विद्वान्, लेखक, साहित्यकार, विभिन्न विषयों के पण्डित, कलाविद्, दार्शनिक आदि हुए जिन्होंने भारत की संस्कृति के अनेक क्षेत्रों में मौलिक योगदान किया है।

कश्मीरी पंडित अपने को कश्यप मुनि की सन्तान मानते हैं। कहा जाता है कि आज से लगभग 50ए000 वर्ष पूर्व कश्मीर घाटी सतीसर नाम की एक बहुत बड़ी झील के रूप में थी जो चारों ओर से विशाल पर्वतों की श्रृंखला से घिरी हुई थी। इसमें जलोद्भव नामक एक राक्षस निवास करता था जो ऋषियों और मुनियों की तपस्या में विघ्न डालता था। कश्यप मुनि ने उसका वध करने के उद्देश्य से अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग करते हुए भगवान् विष्णु की आराधना की। उन्होंने बारामुला के निकट अपने तीर से इस पर्वत श्रृंखला को भेदकर सतीसर झील का पानी निकाल दिया और जलोद्भव का वध कर उसके आतंक को समाप्त कर दिया। इस प्रकार पर्वतों के मध्य समतल भूमि निकल आयी जिस पर कश्यप मुनि ने अपनी इच्छानुसार विद्वान् और गुणी व्यक्तियों को लाकर बसाया जो कालान्तर में कश्मीरी पंडित कहलाने लगे।

ऐसी मान्यता है कि कश्मीरी पंडितों के पूर्वज वैदिक काल में सरस्वती नदी के तट पर निवास करते थे, जो तिब्बत में स्थित मानसरोवर झील से निकल कर कश्मीर की पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला को पार कर पंजाब तथा राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से बहती हुई अरब सागर में जाकर गिरती थी। वैदिक काल की यह सरस्वती नदी ईसा से लगभग 3050.3000 वर्ष पूर्व किसी विशाल भौगोलिक परिवर्तन के कारण लुप्त हो गयी और उसके दोनों तटों पर बसे कश्मीरी पंडितों के पूर्वज वहाँ से पलायन कर कश्मीर घाटी में जाकर बस गये। इस नाते वे अपने को सारस्वत ब्राह्मण कहते हैं।

कश्मीरी पंडित अपने को सात महान् ऋषियों कश्यप, भरद्वाज, दत्तात्रेय, गौतम, विश्वामित्र, अत्रि मुनि तथा वशिष्ठ की सन्तान मानते हैं जिसके आधार पर उनमें उक्त ऋषियों के नाम पर गोत्र का चलन प्रारम्भ हुआ। इन्हीं सप्त ऋषियों को आधार मानकर सप्तऋषि पंचांग की गणना प्रारम्भ हुई जिसके अनुसार यह घटना आज से लगभग 5081 वर्ष पूर्व घटित हुई। हिन्दू समाज के अन्य वर्गों की तरह कश्मीरी पंडितों में भी समान गोत्र में विवाह करना वर्जित है।

चौदहवीं शताब्दी में इस्लाम के प्रवेश के साथ कश्मीरी समाज में भूचाल आ गया। बड़ी संख्या में कश्मीर के लोगों ने नया धर्म स्वीकार कर लिया। इस्लाम के आगमन के साथ कश्मीरी पंडितों के अपनी मातृभूमि से पलायन का इतिहास भी आरम्भ हो गया। प्रायः छः सौ वर्ष के इस दुःखद

इतिहास का यहाँ वर्णन करना सम्भव नहीं है। कश्मीर घाटी से कश्मीरी पंडितों का बहुत बड़े पैमाने पर प्रथम बार पलायन सुल्तान सिकन्दर बुतशिकन (1389.1420) के शासन काल में हुआ जब उसने तलवार की नोक पर कश्मीरी पंडितों का धर्मान्तरण तथा उनकी आस्था के केन्द्रों और मन्दिरों को ध्वस्त करना प्रारम्भ किया। सुल्तान ज़ैनुलआबिदीन (1420.1470) ने जो एक उदार शासक था, कश्मीरी पंडितों को आमंत्रित कर पुनः घाटी में बसाया और उनको अनेक सुविधाएँ प्रदान कीं। पर इस प्रयास के कारण प्रथम बार कश्मीरी पंडित समुदाय में विभाजन हो गया। घाटी के मूल कश्मीरी पंडित जिन्होंने वहाँ से पलायन नहीं किया था, अपने को 'मलमासी' कहने लगे और जो कश्मीरी पंडित पलायन के पश्चात् जैनुलअबिदीन के निमंत्रण पर घाटी में आकर पुनः बसे और उसके कृपापात्र बने, अपने को 'भानमासी' कहने लगे। जो पहले पलायन कर गये थे, वापस आने पर पूर्ववत् 'दर' लिखते रहे और जिन्होंने जंगलों में छिपकर अपनी जान बचायी थी, वे अब 'धर' लिखने लगे।

मुसलमानों के आने के बाद कश्मीर की राजभाषा बदल गयी। 15वीं शताब्दी में कश्मीर के मुसलमान शासक ज़ैनुलआबिदीन (1420.70 ई0) के समय राजकाज संस्कृत की जगह फ़ारसी भाषा में किया जाने लगा तो कश्मीरी पण्डितों ने नई भाषा सीखना आरम्भ कर दिया और शीघ्र ही उन्होंने उसमें महारत हासिल कर ली। मुग़ल प्रशासन में फारसी का प्रवेश अकबर (1556.1605 ईस्वी) के समय हुआ। मुग़लों के सूबों में भी फारसी का ही उपयोग किया जाने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि व्यक्तिगत, राजनीतिक या धार्मिक कारण से उत्तर भारत के मैदानी भाग में पलायन करने वाले फारसी के ज्ञाता कश्मीरी पंडितों को मुग़ल दरबार या सम्राज्य के सूबों में नौकरी मिलने में कठिनाई नहीं होती थी। क्या दुर्योग है कि कश्मीरी पंडितों के अपनी जन्मभूमि से पलायन का जो सिलसला 14वीं शताब्दी में शुरू हुआ, वह आज तक चला आ रहा है।

## अवध में आगमन :

कश्मीरी पंडितों का अवध में आना तब शुरु हुआ जब मुग़ल साम्राज्य के इस सूबे का केन्द्र अयोध्या के पास बंगला था जो बाद में फैजाबाद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुग़ल बादशाह मुहम्मदशाह ने ईरान से आये हुए मुहम्मद अमीन को 'सआदतखाँ बुरहानुलमुल्क' का ख़िताब देकर 1722 ईस्वी में अवध का सूबेदार नियुक्त किया तो उन्होंने बंगला को अपनी राजधानी अवश्य बनाया परन्तु वे लखनऊ में भी रहते थे। उनके दामाद सफ़दरजंग (1739.1754) उनके उत्तराधिकारी हुए, जो दिल्ली दरबार की राजनीति में भी महत्त्वपूर्ण बने रहे। उनके पुत्र शुजाउद्दौला अवध के तीसरे नवाब थे जिन्होंने फैजाबाद को राजधानी का रूप दिया। चौथे नवाब आसफुद्दौला 1775 ईस्वी में राजधानी लखनऊ ले आये तो सरकारी सेवा में लगे कश्मीरी पंडित भी लखनऊ चले आये।

लखनऊ के विषय में मान्यता है इस कि नगर को श्री राम के अनुज लक्ष्मण ने बसाया और उन्हीं के नाम पर गोमती नदी के उत्तर में स्थित ऊँचे भूभाग का नाम लक्ष्मण टीला पड़ा जिस पर कभी प्राचीन दुर्ग के खण्डहर एवं शेषनाग का मन्दिर विद्यमान था। सन् 1018 में ग़ज़नी के महमूद ने भारत पर आक्रमण किया और वह मारकाट करता हुआ जमुना नदी को पार कर कन्नौज तक आया जिसके उपरान्त उसका भतीजा सालार मसूद अपने लावलश्कर के साथ गंगा नदी को पारकर लखनऊ पहुँचा और नगर के उत्तर पूर्व क्षेत्र में स्थित बिजनौर गाँव में अपना डेरा डाला। इस प्रकार 11वीं सदी के उत्तरार्ध में मुसलमानों का लखनऊ में प्रथम बार आगमन हुआ किन्तु

लखनऊ का एक प्रमुख नगर के रूप में विकास मुग़ल सम्राट अकबर के शासन काल में हुआ। उसी समय नगर का मुख्य चौक बाज़ार विकसित हुआ और उसके उत्तरी किनारे पर एक प्रमुख गेट का निर्माण हुआ जो इलाका अब अकबरी गेट कहलाता है। नगर की आबादी की सुरक्षा के लिए दक्षिण में एक दरवाज़े का निर्माण कराया गया जिस पर तोपें लगाई गयीं ताकि दिल्ली के मुख्य मार्ग से किसी भी आक्रमण का पूरी तरह से मुकाबला किया जा सके। इस मुहल्ले का नाम बाद में तोपदरवाजा पड़ा जहाँ मुग़ल शाही सेना का एक रिसाला बराबर तैनात रहता था और जिसका नेतृत्व एक रिसालदार करता था। इस सेना की टुकड़ी के लिए गोला बारूद का भण्डार आबादी से दूर पूर्व में बनाया गया जो मोहल्ले अब गोलागंज और बारूदखाना कहलाते हैं।

सआदत खाँ बुरहानुलमुल्क की नायब (उप मुख्य) के पद पर नियुक्ति के साथ अवध के इतिहास का स्वर्णकाल आरम्भ हो गया। उनके नवासे नवाब शुजाउद्दौला (1754.1775) ने प्रथम बार कुछ समय के लिए लखनऊ को अपनी राजधानी बनाया जिसके कारण शाही सेना में नियुक्त कुछ कश्मीरी पंडितों का लखनऊ नगर में पहली बार आगमन हुआ जिनमें पंडित दयाराम मुट्टू, पंडित आत्माराम किचलू, पंडित चतुर्भुज गंजू, पंडित दयाराम सोपोरी इत्यादि के परिवार प्रमुख थे और जो रानी कटरा मुहल्ले में रहने लगे क्योंकि वहीं निकट में शाही रिसाला तैनात रहता था।

## नवाबों का शासन काल :

लखनऊ में कश्मीरी पंडितों का बड़ी संख्या में आगमन चौथे नवाब आसफुद्दौला (1775.1797) के शासनकाल में हुआ जब उन्होंने फैज़ाबाद के स्थान पर लखनऊ को अवध की राजधानी बनाया। नवाब की सेवा में लगे कश्मीरी पंडित भी अपने परिजनों के साथ लखनऊ आ गये और जहाँ वे बसे, वह इलाका कश्मीरी मोहल्ले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने 1775 और 1780 ईस्वी के बीच यहाँ भव्य हवेलियों का निर्माण कराया जो अधिकतर मुग़ल वास्तुकला पर आधारित हैं तथा जिन पर ईरानी शिल्पकला का प्रभाव साफ झलकता है। उस समय पर्दा प्रथा का अधिक चलन था, इसलिए इन हवेलियों में अन्दर ही अन्दर चोर रास्ते हुआ करते थे जिससे औरतों को एक हवेली से दूसरी हवेली में जाने के लिए सड़क पर न चलना पड़े। अपने मूल स्थान कश्मीर के वातावरण को जीवित रखने तथा अपनी पुरानी परम्पराओं और मान्यताओं को बनाये रखने के लिए इन कश्मीरी पंडितों ने अपने कुल पुरोहितों तथा कश्मीरी व्यंजन बनाने के लिए कश्मीरी रसोइयों को भी यहाँ बुलाकर संरक्षण प्रदान किया।

फैज़ाबाद से आकर लखनऊ में बसनेवाले कश्मीरी पंडितों में उर्दू के प्रसिद्ध लेखक रतननाथ दर 'सरशार' के पितामह बेनीराम दर भी थे जिनका निवास कश्मीरी मोहल्ले में था। प्रसिद्ध शायर ब्रजनारायण चकबस्त के पूर्वज भी इसी मोहल्ले में आकर बसे। उर्दू के मशहूर शायर पं0 दयाशंकर कौल 'नसीम' के पिता पं0 गंगाप्रसाद कौल का आगमन भी फैज़ाबाद से हुआ था।

नवाब आसफुद्दौला बड़े दरियादिल थे, इस कारण बहुत से कश्मीरी पंडित इस दौर में सीधे कश्मीर से आकर लखनऊ में बसे। पंडित बिशननाथ तैमनी ने, जो नवाब आसफुद्दौला के शासन काल में लखनऊ आये, अपने व्यापार के लिए चौपटियों में एक कोठी का निर्माण कराया जो रेशमवाली कोठी कहलायी। उनके वंश में बड़े योग्य और प्रतिष्ठित लोग हुए। पं0 गुलाबराय तैमनी बहावलपुर रियासत के दीवान् पं0 श्रीराम तैमनी कश्मीर में वज़ीरे-वज़रत, पं0 केदारनाथ तैमनी लाहौर में जज, पं0 कुलदीप प्रकाश तैमनी रेलवे बोर्ड के सदस्य, डा0 इकबालनाथ तैमनी इलाहाबाद

विश्वविद्यालय में रसायनशास्त्र के प्रोफेसर, पं0 जगदीपनारायण तैमनी भारतीय सेना में मेजर जनरल तथा पं0 जगदीशप्रकाश तैमनी प्रतिष्ठित चार्टर्ड एकाउंटेंट बने। इसी समय भोलानाथ गंजू ने पीने के पानी की व्यवस्था के लिए एक कुएँ का निर्माण कराया। बाद में इस इलाके का नाम भोलानाथ कुआँ पड़ गया। पं0 बुलाकी कौल के नाम से टूड़ियागंज के आगे बुलाकी अड्डा भी इसी काल में बसा। कश्मीरी पंडितों को अवध में शायद इस नाते भी मान-सम्मान अधिक मिला क्योंकि वे अवध के ईरानी मूल के नवाबों की तरह गोरे चिट्टे और कद-काठी में वैसे ही लम्बे-चौड़े थे।

नवाब आसफुद्दौला ने सिक्के ढालने के लिए चौपटियों में सिन्दोहन देवी के मन्दिर के पास एक टकसाल स्थापित की जिसकी उचित देखभाल के लिए पंडित गौरीशंकर कोचक के नियुक्त किया गया। नवाब आसफुद्दौला की पत्नी शमसुल्निसा की जागीर की सुरक्षा और व्यवस्था के लिए पंडित लक्ष्मीनारायण कौल शर्गा व उनके अनुज पंडित निरंजननाथ कौल शर्गा को नियुक्त किया गया। यह दोनों भ्राता बहू बेगम के खास विश्वासपात्र थे और उनकी शाही घुड़सवार टुकड़ी में सेनानायक थे। वे अनेक युद्ध क्षेत्रों में अपने अपार साहस, शौर्य और पराक्रम का परिचय दे चुके थे।

पंडित जिन्दराम चौधरी को नवाब ने तंख़ा वितरण करने वाले विभाग का दरोग़ा नियुक्त किया जिसके कारण वह अपने को पंडित जिन्दराम चौधरी तंख़ा कहने लगे। कश्मीरी पंडित भगवान् शिव के उपासक हैं, इसलिए उन्होंने रानी कटरा मुहल्ले में सन् 1780 के आरम्भ में एक विशाल शिव मन्दिर का निर्माण कराया जो बाद में बड़ा शिवाला के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके प्रांगण में कश्मीरी पंडितों की इष्ट देवी माँ राज्ञा भगवती की भी एक विशाल मूर्ति है जिन्हें अब कुछ लोग संकटादेवी के नाम से पुकारते हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार लगभग 1000 कश्मीरी पंडित परिवार इस दौर में कश्मीर तथा देश के अन्य स्थानों से आकर लखनऊ में बसे। उस समय उनके मुख्य मुहल्ले कश्मीरी मुहल्ला, कटरा बिजन बेग, तोप दरवाज़ा, चौपटियाँ, रानी कटरा और झवाई टोला थे।

नवाब आसफुद्दौला की फौज में पं0 दिलाराम मदन नामक एक कश्मीरी पंडित अधिकारी थे जिनकी किसी कारण नवाब से खटपट हो गयी और उन्होंने शाही फौज से अपना नाता तोड़कर ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में नौकरी कर ली। अंग्रेजों ने उनको सन् 1791 में अपनी घुड़सवारों की टुकड़ी के साथ मैसूर के शासक टीपू सुल्तान से लोहा लेने के लिए भेजा पर हैज़ा हो जाने के कारण मार्ग में उनकी मृत्यु हो गयी। तब उनका परिवार लखनऊ से ग्वालियर रियासत और बाद में दिल्ली पलायन कर गया। पंडित दिलाराम मदन के पौत्र राजा दीनानाथ मदन पंजाब के महाराजा रंजीत सिंह के वित्त मंत्री बने और काफी ख्याति अर्जित की। लखनऊ के एक निवासी पंडित भास्करराम तिक्कू कश्मीरी शाल के प्रतिष्ठित व्यापारी थे। उनके भतीजे दीवान नन्दराम तिक्कू काबुल के प्रधानमंत्री बने। अफगानिस्तान का शासक उन पर इतना भरोसा करता था कि उसकी अनुपस्थिति में दीवान तिक्कू को शासक के सारे अधिकार प्राप्त रहते थे। यहाँ तक कि एक बार दीवान साहब ने अपने नाम की स्वर्ण मुद्राएँ काबुल में चलवा दीं।

इस सिक्के का फ़ारसी लेख बड़ा रोचक है जिसकी पहली पंक्ति में बताया गया है कि यह नन्दराम द्वारा काबुल मुल्क में चलाया गया सिक्का है और दूसरी पंक्ति में मुसलमानों से राम-राम कहकर उनका अभिवादन किया गया है –

## सिक्काए ज़द्दूर मुल्क-ए-काबुल नन्दराम
## अज मुसलमानन बा गोयद राम राम

नवाब आसफुद्दौला के शासनकाल में एक फ्रांसीसी घोड़ों का सौदागर लखनऊ आया और उसने तिजारत करने के लिए मच्छी भवन के निकट अपने लिए भव्य आवास का निर्माण कराया। वह बाद में फिरंगी महल के नाम से विख्यात हुआ और यहाँ इस्लाम एवं उर्दू तथा फारसी भाषा के अदब का एक केन्द्र बना। इसमें अरबी तथा फारसी भाषा के उच्चकोटि के विद्वान् पंडित बेनीराम मुबई ने अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने अपनी विद्वत्ता के कारण काफी ख्याति अर्जित की।

नवाब आसफुद्दौला ने पंडित बख्तमल कौल को चकलादार नियुक्त किया जिनका कार्य किसानों से लगान वसूल करना था। उनके अग्रज पंडित महताब राय कौल को रिसालदार बनाया गया। शाही ज़ेवरात की सुरक्षा का प्रबंध पंडित महताब राय गुर्टू को दिया गया। इस प्रकार कई कश्मीरी पंडितों ने विभिन्न विभागों में अपनी कार्य कुशलता के बल पर नियुक्तियाँ पायीं।

आसफुद्दौला के शासन में पंडित भोलानाथ काव किसी बहुत ऊँचे पद पर नियुक्त थे। उनका इतना सम्मान था कि आसफुद्दौला उनसे मिलने उनके कश्मीरी मोहल्ले में स्थित आवास में आया करते थे। प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि इनके एक वंशज पंडित रामेश्वरनाथ काव स्वतंत्र भारत में 'रॉ' नामक संगठन के संस्थापक-निदेशक थे।

नवाब आसफुद्दौला की सन् 1797 में मृत्यु के पश्चात् जब सन् 1798 में अंग्रेजों ने उनके सौतेले भाई नवाब सआदतअली खाँ को बनारस (वाराणसी) से बुलाकर अवध का शासक बनाया तो हरदोई जनपद के कुछ दबंग किसानों ने नवाब को लगान देना बन्द कर दिया। तब नवाब सआदतअली खाँ ने लगान को वसूलने का कार्य पंडित बख्तमल कौल को सौंपा और उनके साथ शाही फौज की एक घुड़सवार टुकड़ी को रवाना किया गया। पंडित बख्तमल कौल ने न केवल किसानों से शाही लगान वसूला अपितु उनकी जमकर इतनी ठुकाई की कि उनकी सारी दबंगई और दादागीरी खत्म हो गयी। उनके इस कार्य से प्रसन्न होकर नवाब सआदत अली खाँ ने हरदोई जनपद में तंड़ियाव का इलाका उन्हें जागीर के रूप में प्रदान किया जहाँ उनके पुत्र राजा दिलाराम कौल ने बाद में एक किला बनवाया जिसमें शाही फौज की एक टुकड़ी सुरक्षा के लिए तैनात रहती थी।

नवाब ग़ाज़ीउद्दीन हैदर के शासन काल में सन् 1816 के आसपास पंडित शिवप्रसाद ग़ौग़ाई का परिवार ग्वालियर रियासत से आकर लखनऊ के कश्मीरी मुहल्ले में बसा। आप 1820 के आसपास कलकत्ते में सद्रे दीवानी अदालत में सरिशतेदार के पद पर नियुक्त हुए। पंडित शिवप्रसाद के परिवार में बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति हुए। इनमें सबसे विलक्षण उनके पुत्र पंडित शम्भुनाथ पंडित हैं जिनका जीवन चरित लगन और परिश्रम की अनुपम कहानी है। उनका जन्म 1820 में लखनऊ में हुआ और यहीं उन्हें उर्दू-फारसी की आरम्भिक शिक्षा मिली। फिर वे अपने पिता के पास कलकत्ता चले गये। जहाँ 1832 में उन्होंने गौर मोहन आद्या स्कूल में प्रवेश लिया। 1834 में अंग्रेजी शिक्षा के लिए वे ओरिएन्टल सेमीनरी में भरती हुए। आर्थिक कठिनाई के कारण उन्होंने 1842 में कचहरी में लिपिक की नौकरी कर ली। वे इतने अध्ययनशील थे कि उन्होंने अपने प्रयत्न से उस समय की न्याय-व्यवस्था का गहरा अध्ययन किया और उसकी सविस्तार व्याख्या करके सबको चकित कर दिया। तीस वर्ष की अवस्था में 1851 में पुनः अध्ययन आरम्भकर वे 1852 में सद्रे दीवानी अदालत में

वकील बन गये। आपने बैरिस्टर राबर्ट बारलो के संरक्षण में वकालत आरम्भ की और शीघ्र ही उनकी गणना उच्चकोटि के वकीलों में की जाने लगी। 1861 में उन्हें सद्रे दीवानी अदालत में सरकारी वकील नियुक्त कर दिया गया। उनकी प्रतिभा और कानून के गहरे ज्ञान का सिक्का ऐसा जमा कि 1862 में कलकत्ता हाईकोर्ट की स्थापना के एक वर्ष बाद 1863 में उच्च न्यायालय में नियुक्त होने वाले वे प्रथम भारतीय न्यायाधीश बन गये। महारानी विक्टोरिया के हस्ताक्षर से युक्त उनका नियुक्ति-पत्र पटना संग्रहालय में आज भी सुरक्षित है।

आपने न्याय के क्षेत्र में न केवल ख्याति अर्जित की अपितु कानूनी दाँव-पेंच के जटिल मुकदमों में अपने न्यायपूर्ण और तर्कसम्मत निर्णयों द्वारा नये कीर्तिमान स्थापित किये। आपने अंग्रेज़ों द्वारा बनाये गये कानूनों को इस प्रकार परिभाषित किया कि वे भारतीयों की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा कर सकें। अंग्रेज़ों द्वारा भारत में नयी न्याय प्रणाली और उससे सम्बन्धित नीचे की अदालतों के फ़ैसलों की व्याख्या और विवेचना करने का आपका तरीका बिलकुल अनूठा था जिसे नज़ीर के रूप में बहुत समय तक प्रयोग किया जाता रहा। आपके द्वारा दिये गये अनेक फ़ैसले कलकत्ता उच्च न्यायालय के संग्रहालय में सुरक्षित हैं जो कानून के शोधकर्ताओं के लिए एक बहुमूल्य सामग्री है।

शम्भुनाथ पंडित सामाजिक उत्थान के कार्यक्रमों में भी बहुत रुचि लेते थे। उन दिनों राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्मो समाज के नेतृत्व में समाज- सुधार का आन्दोलन चल रहा था। वे इस संस्था के सक्रिय सदस्य बन गये। सतीप्रथा के विरुद्ध तथा बाल विधवाओं के पुनर्विवाह के समर्थन में चल रहे आन्दोलन वे के प्रबल समर्थक थे। केवल 47 वर्ष की अवस्था में 1867 में शम्भुनाथ पंडित का निधन हो गया। कलकत्ता में आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान का अन्दाज़ इस बात से लगाया जा सकता है कि भवानीपुरस्थित आपके आवास के सामने की सड़क का नाम शम्भुनाथ स्ट्रीट है और उस नगर में आपके प्रशंसकों ने आपकी पुण्यस्मृति में शम्भुनाथ अस्पताल का निर्माण कराया है।

शम्भूनाथ पंडित के ज्येष्ठ पुत्र प्राणनाथ पंडित का जन्म 1840 के आसपास हुआ था। आपने सन् 1874 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको महामहोपाध्याय की उपधि से अलंकृत किया गया। बी0एल0 करके आप प्रेसिडेन्सी कालेज में टैगोर लॉ प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त हुए। आप 1892 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में फ़ेलो बने। आपकी 26 अक्टूबर, 1892 को मृत्यु हो गयी। आपकी स्मृति में कलकत्ते में प्राणनाथ स्ट्रीट है। आपके सुपुत्र रामचन्द्र पंडित बैंक ऑफ बिहार के संस्थापक सदस्य थे। आपके पुत्र मदनमोहन पंडित पटना में बैंक ऑफ बिहार के मैनेजर थे और उनके पुत्र सत्यप्रकाश पंडित अब लखनऊ में निवास करते हैं। इस प्रकार यह कश्मीरी पंडित परिवार उन मुट्ठीभर परिवारों में हैं जो नवाबों के काल में लखनऊ आये और आज तक इस नगर से जुड़े हुए हैं।

अपनी योग्यता और निष्ठा के कारण कश्मीरी पंडित अन्त तक अवध के नवाबों के विश्वासपात्र बने रहे। गवर्नर जनरल डलहौज़ी की अवध के अधिग्रहण की योजना के अन्तर्गत जब 1856 में वाजिदअली शाह को सिंहासन से उतारकर कलकत्ता में नजरबन्द कर दिया गया तो राजमाता मलिका किश्वर (अमजदअली शाह की पत्नी और वाजिदअली शाह की माता) ने अपने खास मुशीरकार (सलाहकार) पंडित दुर्गाप्रसाद शर्गा से मंत्रणा की और तय किया कि लन्दन जाकर

महारानी विक्टोरिया से इस सम्बन्ध में अपील की जाय। मलिका किश्वर के नेतृत्व में 110 सदस्यों का प्रतिनिधि मण्डल लन्दन गया तो पंडित दुर्गाप्रसाद शर्गा भी उसमें शामिल हुए। यह प्रयत्न असफल रहा और वापस लौटते समय फ्रांस में मलिका किश्वर का निधन हो गया और उन्हें वहीं दफ़्न किया गया। प्रतिनिधि मण्डल के साथ पं0 दुर्गाप्रसाद भी वापस लौट आये। अंग्रेजों ने उन पर विद्रोह करने का दोष मढ़कर उनका वसीका बन्द कर दिया। बाद में 1859 में सिटी मजिस्ट्रेट मिस्टर कार्नेगी के आदेश से वह पुनः चालू हुआ। नवाबों ने अपने शासनकाल में अनेक कश्मीरी पंडितों को जो राजदरबार में विभिन्न पदों पर आसीन थे और उनके विश्वासपात्र थे, बड़ी–बड़ी जागीरें अता फरमाई जिसके कारण समाज में उनका काफी दबदबा और प्रभाव स्थापित हो गया।

नवाबी लखनऊ के उल्लेखनीय कश्मीरी पंडितों में एक थे पं0 टीकाराम दर जिनका परिवारिक छापाखाना था जिसमें वाज़िदअली शाह के शासनकाल में शाही फ़रमान तथा उनकी पुस्तकें छपती थीं। जब अंग्रेज़ों ने नवाब वाज़िदअली शाह को कलकत्ते में नज़रबन्द कर दिया तो पंडित टीकाराम दर ने खिन्न होकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध अभियान चलाया जिसके लिए उन्होंने एक बड़ी नाव पर गोमती नदी में चलायमान छापाखाना स्थापित किया जहाँ चोरी–चुपके से पर्चे छपवाकर लखनऊ में वितरित किये जाते थे। ख़तरे की ज़रा सी भी भनक लगते ही नाव को आगे बढ़ा दिया जाता था ताकि उन्हें पुलिस पकड़ न सके। यह उस समय का बिलकुल अनूठा भूमिगत आन्दोलन था। अपने इस आन्दोलन में बहुत अधिक सफ़ल न होने पर पं0 टीकाराम दर लखनऊ से बनारस चले गये और वहाँ बस गये।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, नवाबों की रईसी आदतों और बहुत अधिक धन–दौलत आ जाने के कारण कुछ कश्मीरी पंडित अपने रास्ते से बहक भी गये। नवाबों की सोहबत में कुछ तवायफों के कोठों का चक्कर लगाने लगे और बिरादरी पर अपना रौब ग़ालिब करने के लिए बेगमों को अपनी रखैल के रूप में रखने लगे। पंडित महताब राय गुर्टू इस गंगा—जमुनी तहजीब की लपेट में आकर अपने को नवाब महताब राय बताने लगे और एक बेगम के साथ कलकत्ता जाकर बस गये। वहीं पंडित चतुर्भुज गंजू के एक पुत्र एक शाही बेगम के साथ इस डर से काबुल भाग गये कि कहीं नवाब उनका सिर न कलम कर दें।

पूरे नवाबी शासनकाल में सन् 1856 तक लखनऊ नगर का कश्मीरी मुहल्ला मनसबदारों और राज दरबारियों का एक प्रमुख गढ़ रहा। सुख और समृद्धि के वातावरण में यहाँ के निवासी कश्मीरी पंडितों ने उर्दू और फ़ारसी साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान किया। इस मोहल्ले में शायद ही कोई ऐसा घर हो जहाँ एक या दो शायरों ने जन्म न लिया हो। हर शाम शायरों की महफ़िल जमना एक आम बात थी जहाँ उर्दू तथा फारसी अदब के लोग खुले विचारों के साथ चर्चा में मशगूल रहते थे और एक–दूसरे पर छींटाकशी भी शेरो–शायरी में की जाती थी। इस दौर में अनेक नामी गिरामी कश्मीरी पंडित शायर हुए जिन्होंने अपने कलाम के बल पर बड़ी शोहरत और सम्मान पाया। दुर्भाग्यवश इनमें से अधिकांश के कलाम का संग्रह नहीं किया गया जिसके कारण ये शायर गुमनामी के अंधेरे में लुप्त हो गये। इस युग के शायरों में सबसे प्रसिद्ध दयाशंकर कौल 'नसीम' हुए।

आपका जन्म सन् 1811 में हुआ। आप ने उस समय के विख्यात शायर ख्वाजा हैदर अली 'आतिश' को अपना उस्ताद बनाया। आप नवाब अमजद अली शाह के शासन काल में राजकवि बन

गये थे। आपने प्रारम्भ में अपनी शायरी गज़लें कहने तक ही सीमित रखी पर बाद में आपने मस्नवी कहने में महारत हासिल की। आपने गुल बकावली (एक फारसी साहित्यिक रचना) का शायरी में रूपान्तर कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आप बहुत ही हाज़िर जवाब शायर थे और तुरन्त शेर कह देते थे। एक दफ़ा शेख़ नासिख ने नसीम को छोड़ते हुए मिस्रा पढ़ा – **शेख ने मस्जिद बना मिस्मार बुतखाना किया** और कहा कि दूसरा मिस्रा उठ नहीं रहा है। नसीम ने बिना कोई विचार किये तुरन्त कहा – **तब तो एक सूरत भी थी अब साफ़ वीराना किया।** इसी प्रकार एक दूसरे मुस्लिम शायर ने कहा – **काफ़िर है वो जो बन्दे नहीं इस्लाम के।** सुनते ही नसीम ने नहले पर दहला मारा – **''लाम के मानिन्द हैं गेसू मेरे घनश्याम के, काफ़िर हैं वो जो बन्दे नहीं इस लाम के''।** इस प्रतिभाशाली शायर का केवल 32 वर्ष की आयु में हैज़ा हो जाने के कारण सन् 1843 में भरी जवानी में निधन हो गया। मस्नवी को नया रंग देने और अपनी 'गुल बकावली' के कारण नसीम उर्दू जगत में अमर हो गये।

## अंग्रेजी शासन :

1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत की सत्ता संभाली तो नवाबी युग का अन्त हो गया। उसके अवशेष भले ही कुछ समय तक बचे रहे परन्तु लखनऊ के जीवन में नये ज़माने का सबेरा आ गया था। नई सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों ने नई–नई सम्भावनाओं और अवसरों के दरवाज़े समाज के बहुत बड़े वर्ग के लिए खोल दिये जिसका पूरा लाभ कश्मीरी पंडित समुदाय ने उठाया। सच तो यह है कि आगे आने वाले युग को सबसे पहले इसी समुदाय ने समझा। इसलिए हर क्षेत्र में, चाहे वह शिक्षा हो, सरकारी सेवा हो, वकालत हो या राजनीतिक–सार्वजनिक जीवन हो, सभी जगह वे अगली पंक्ति में खड़े दिखाई देते हैं।

लखनऊ पर कब्जा करने के बाद अंग्रेजों का ध्यान सर्वप्रथम ज़मीन के बन्दोबस्त पर गया। अवध के नवाबों की सम्पत्ति पर उनका अधिकार हो गया था जिसकी नये सिरे से व्यवस्था की जानी थी। इसके लिए उन्होंने पंडित दयानिधान गंजू को लखनऊ का प्रथम तहसीलदार नियुक्त किया। उनकी देख–रेख में 1862 में पहली बार लखनऊ ज़िले की ज़मीनों–जायदादों के अभिलेख तैयार किये गये जिसे बन्दोबस्त–ए–अव्वल के नाम से जाना जाता है। उनके पौत्र पंडित जगपालकृष्ण गंजू ने 1914 में अपने पितामह के नाम से लालबाग में एक विशाल पार्क बनवाया जो आज भी 'दयानिधान पार्क' कहलाता है।

लखनऊ के कश्मीरी पंडित नये युग के लिए तैयारी तो कर ही रहे थे, उन्हें इस बात की चिन्ता भी थी कि दूर देश में और पश्चिम के प्रभाव से उनकी संस्कृति सुरक्षित रहे। अपनी सांस्कृतिक–धार्मिक पहचान बनाये रखने के लिए उन्होंने पंडित भोलानाथ बक्शी की बगिया में कश्मीर के 17वीं सदी के महान् सन्त ऋषिपीर की पावन स्मृति में 'ऋषिपीर का जाग' के नाम से एक धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ किया जो प्रतिवर्ष सावन के महीने में एक सप्ताह तक चलता था। इसमें यज्ञ के साथ प्रतिदिन सायंकाल मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे जिनके पश्चात् बिरादरी के सदस्य कश्मीरी व्यंजनों और पकवानों का भरपूर ज़ायका लेते थे। पर बिरादरी के कुछ प्रगतिशील तथा उदारवादी नवयुवक पंडित ब्रजनारायण चकबस्त की अगुआई में इन आयोजनों को पाखण्ड, आडम्बर तथा रूढ़िवादी प्रथाओं का प्रतीक बताकर उसकी आलोचना करने लगे। उन्होंने अपनी विचारधारा को फैलाने के लिए उस मंच का उपयोग करना आरम्भ किया

जिससे खिन्न होकर आयोजकों ने इस अनुष्ठान को सन् 1906 में सदा के लिए बन्द कर दिया। इसके बाद ही पंडित ब्रजनारायण चकबस्त की प्रथम पत्नी श्रीमती ज्वाला चकबस्त सुपुत्री पंडित पृथ्वीनाथ नागू और उनके नवजात पुत्र की मृत्यु हो गयी। इस दुर्घटना का जो भी अर्थ समझा जाय, तब से लेकर आज तक फिर इस प्रकार का सामूहिक आयोजन इतने बड़े पैमाने पर कश्मीरी पंडित बिरादरी में सम्भव नहीं हो सका।

यह बात बड़ी महत्त्वपूर्ण है कि लखनऊ के सामाजिक वर्गों में अंग्रेज़ी पढ़ने का शौक सबसे पहले कश्मीरी पंडितों में पैदा हुआ। पंडित शिवनारायण बहार प्रथम कश्मीरी पंडित थे जिन्होंने ला मार्टीनियर कालेज में प्रवेश लिया। उनसे प्रेरणा लेकर समाज के अनेक नवयुवक अंग्रेजी शिक्षा की ओर आकर्षित हुए। पं0 शिवनारायण ने लखनऊ के भारतीय समाज में पहला क्लब 'जलसा-ए-तहज़ीब' स्थापित किया और उसका कार्यालय गोल दरवाज़े में खोला। ये संस्था अनेक प्रकार के सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करती थी। नवयुवकों को विभिन्न सामाजिक विषयों पर लेख लिखने और वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। इतना ही नहीं, पं0 बहार ने कश्मीरी पंडितों में सामाजिक चेतना जाग्रत करने के लिए 'मुरसला-ए-कश्मीर' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी आरम्भ किया। पत्रिका के लिए कश्मीरी पंडित समाज के उत्साह का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि इसके नियमित और सुचारु प्रकाशन के लिए पं0 श्यामनारायण मसलदान ने झवाई टोले में अपना एक मकान छापाखाना खोलने के लिए दे दिया।

कश्मीरी पंडित समाज में सामाजिक सुधार और नवयुवकों को नये ज़माने के लायक बनाने के सम्बन्ध में मंथन बराबर चलता रहा। यह कार्य स्थानीय स्तर पर तो हो ही रहा था, लखनऊ के कश्मीरी पंडित इस विचार को अखिल भारतीय समाज में प्रचारित करना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने सन् 1882 में अपने संसाधन जुटा कर कश्मीरी मोहल्ले के ऐतिहासिक गंजूवालों के शादीखाने में कश्मीरी पंडितों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया जिसमें बिरादरी की अनेक नामचीन हस्तियों ने भाग लिया। सम्मेलन में समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने तथा नवयुवकों को नयी-नयी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने के सम्बन्ध में गहन विचार-मंथन किया गया जिससे वे भविष्य में देश के होनहार नागरिक बन सकें। इस उद्देश्य को गति प्रदान करने के लिए सन् 1905 में पंडित ब्रजनारायण चकबस्त ने 'कश्मीर यंगमेन एसोसिएशन' नाम से एक संस्था का गठन किया और एक पुस्तकालय की स्थापना की जिसका सन् 1906 में डॉ0 सर तेज बहादुर सप्रू ने विधिवत् उद्घाटन किया। इसका लाभ अनेक कश्मीरी पंडित नवयुवकों को मिला जिन्होंने सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करने और दूसरे क्षेत्रों में सफलता पायी।

लखनऊ में कश्मीरी पंडितों की चिन्ता अपने समाज तक ही सीमित नहीं थी, वे नगर के सांस्कृतिक जीवन की उन्नति में पर्याप्त रुचि ले रहे थे। 'जलसा-ए-तहज़ीब' की चर्चा की गयी है जो लखनऊ में हिन्दुस्तानियों का पहला सामाजिक-सांस्कृतिक क्लब था। इसके कार्यक्रमों में अन्य बिरादरियों के हिन्दू तथा मुसलमान हिस्सा लेते थे। इसके अतिरिक्त पंडित ब्रजनारायण चकबस्त ने कश्मीरी मुहल्ले में राष्ट्रीय स्तर के मुशायरों को भी आयोजित करने का सिलसिला प्रारम्भ किया जिनमें देश के हर कोने से शायर आकर अपना कलाम पढ़ते थे। पर सन् 1918 में पंडित ब्रजनारायण चकबस्त के गोलागंज चले जाने के बाद यह सिलसिला समाप्त हो गया।

यह बताया जा चुका है कि अंग्रेजी शिक्षा की ओर सर्वप्रथम आकर्षित होने वाले कश्मीरी पंडित थे जिन्हें उसका लाभ सब जगह मिला। शिक्षा विभाग में डिपुटी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स के पद पर

नियुक्त होनेवाले प्रथम भारतीय पं0 शिवनारायण बहार थे। वे बड़े प्रतिभाशाली, योग्य और कार्यकुशल अधिकारी थे जिन्होंने अपने इन गुणों से अपना जलवा कायम किया और आदर पाया। लखनऊ के प्रसिद्ध कैनिंग कालेज में दो कश्मीरी पंडित अध्यापक नियुक्त हुए – पंडित शिवनारायण उपाध्याय और पंडित प्राणनाथ बजाज। अगली यानी 20वीं सदी में भी लखनऊ के कश्मीरी पंडितों ने शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त योगदान किया जिसकी चर्चा आगे की जायगी।

1857 के ग़दर के बाद अंग्रेज़ों के शासन काल के आरम्भिक दौर में सरकारी नौकरी पाने के लिए कोई प्रतियोगी परीक्षा नहीं होती थी। सरकारी नौकरी व्यक्ति की योग्यता और उसके खानदान को देख कर दी जाती थी। इस नाते जो भी नवयुवक कैनिंग कालेज में बी0ए0 पास करके निकला, अंग्रेज़ उसको तुरन्त डिप्टी कलेक्टर, मुन्सिफ या सब जज बना देते थे। इस दौर में अनेक कश्मीरी पंडित नवयुवक डिप्टी कलेक्टर, मुंसिफ या सब जज बने जिनमें पंडित सूरजनारायण कौल, पंडित प्यारेलाल चक, पंडित सूरजनारायण हरकौली, पंडित हरिकृष्ण कौल, पंडित हरिहर नाथ सोपोरी, पंडित हरसहाय बहादुर के नाम प्रमुख हैं।

कश्मीरी पंडित अधिकारियों ने सरकारी नौकरी में रहते हुए अपनी शान और इज्जत से कभी समझौता नहीं किया। इस सम्बन्ध में केवल एक उदाहरण देना बहुत होगा। पं0 हरसहाय बहादुर जब सन् 1878 में फर्रूखाबाद में सब जज तैनात थे तो वह सुबह–सुबह अंग्रेज जिला जज सॉन्डर्स से मिलने के लिए बंगले पर चले गये। उसको पंडित साहब का सुबह आना नागवार गुज़रा और उसने पंडित साहब से कुछ बदतमीज़ी कर दी। पंडित साहब ने तैश में आकर उसको दो–तीन घूंसे जड़ दिये। प्रदेश के ले0 गवर्नर ने इस कृत्य के लिए पंडित साहब को नौकरी से बर्खास्त कर दिया। पंडित साहब ने सरकार के विरुद्ध मुकदमा ठोंक दिया और कश्मीर चले गये जहाँ महाराजा प्रताप सिंह ने उनको रियासत में जज बना दिया। पंडित साहब यह मुकदमा लन्दन की प्रिवी कौंसिल तक लड़े और आखिर में उन्हें विजयश्री प्राप्त हुई। उन्होंने अंग्रेज़ सरकार से हर्जाना और अपना वेतन वसूला और कश्मीरी मुहल्ले में पंडित हरसहाय बहादुर की तूती बोलने लगी।

इसी कालखण्ड में कई कश्मीरी पंडित नवयुवकों ने मुख्तारगीरी की परीक्षा उत्तीर्ण कर वकालत प्रारम्भ की। उन्होंने काफी धन अर्जित किया और ज़मींदारियाँ खरीद कर बड़े ज़मींदार बन गये जैसे पं0 गंगाप्रसाद तैमनी, पं0 श्यामनारायण मसलदान, पं0 श्रीकृष्ण तिक्कू, पं0 रामनारायण बक्शी, पं0 राजनारायण बक्शी इत्यादि। पं0 रामनारायण बक्शी और उनके अनुज पं0 राजनारायण बक्शी लखनऊ के बहुत बड़े ज़मींदार थे जिनके यहाँ हाथी बँधा रहता था। पं0 रामनारायण बक्शी ने सन् 1866 और सन् 1896 के मध्य लखनऊ, हरदोई और मलिहाबाद कस्बे में लगभग 1100 एकड़ ज़मीन क्रय की। पं0 राजनारायण बक्शी के कोई पुत्र नहीं था। पुत्र की लालसा में एक मौलवी के कहने पर उन्होंने कश्मीरी मोहल्ले में एक मस्जिद तामीर करवा दी पर फिर भी उनको पुत्ररत्न की प्राप्ति नहीं हुई। पंडित राजनारायण बक्शी की बनवायी मस्जिद अब खुमैनी मस्जिद कहलाती है जब कि ईरान के अयातुल्लाह खुमैनी का कश्मीरी मोहल्ले से भला क्या लेना देना !

पं0 गंगाप्रसाद तैमनी ने भिटौली और उसके आसपास के कई गाँव खरीदे। पं0 विश्वनाथ शर्ग़ा ने उतरटिया और उसके निकट कई गाँव क्रय किये। उस समय यह सारा इलाका वन क्षेत्र था जहाँ जंगली जानवरों का भय बराबर बना रहता था और कोई व्यक्ति उधर जाना पसन्द नहीं करता था। अब पं0 विश्वनाथ शर्ग़ा की भूमि पर संजय गाँधी आयुर्विज्ञान संस्थान बना हुआ है और पं0 रामनारायण बक्शी की ज़मींदारी पर राजाजीपुरम् नामक विशाल कॉलोनी बस चुकी है। स्वतंत्र

भारत की सरकार ने सन् 1950 में जमींदारी प्रथा को समाप्त करके ज़मीनें तो ले लीं परन्तु वही सरकार वक्फ़ प्रथा को समाप्त करने की हिम्मत आज तक नहीं जुटा सकी क्योंकि उससे वोट बैंक खिसकने और राजसत्ता जाने का भय बना रहता है।

नवाबों के काल में उर्दू–फ़ारसी शायरी को कश्मीरी पंडितों के योगदान का उल्लेख किया जा चुका है। अंग्रेज़ों की सत्ता स्थापित होने के बाद भी इस समाज में साहित्य का अनुराग बना रहा और नये ज़माने के अनुरूप उसमें रचनाकार उत्पन्न होते रहे। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में लखनऊ से उर्दू के दो समाचार पत्र प्रकाशित होते थे, एक था मुंशी सज्जाद हुसैन का ''अवध पंच'' और दूसरा था मुंशी नवल किशोर का ''अवध अखबार''। इन दोनों समाचार पत्रों में पंडित रतननाथ दर ''सरशार'' और पंडित त्रिभुवननाथ सप्रू ''हिज्र'' की रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती थीं। पंडित रतननाथ दर की चुटीली शैली को पाठकगण बहुत पसन्द करते थे।

'सरशार' साहब का जन्म 1840 के आसपास कश्मीरी मुहल्ले में हुआ था। जब वे केवल चार वर्ष के थे तो उनके पिता का स्वर्गवास हो गया जिसके कारण उनकी सुव्यवस्थित शिक्षा नहीं हो सकी। 'सरशार' साहब के आवास के चारों तरफ़ बहुत ही सभ्य एवं कुलीन परिवारों की बेगमों की हवेलियाँ थीं जहाँ बिना किसी रोक–टोक के 'सरशार' साहब का आना–जाना रहा करता था। उनकी सोहबत में उन्होंने उर्दू भाषा पर महारत हासिल की और उनकी बात करने की अदा और आम बातचीत में मुहावरों के प्रयोग को बड़ी बारीकी से समझा। 'सरशार' साहब के उस्ताद मुंशी मुजफ्फर अली 'असीर' थे जो उस समय के एक जाने–माने शायर थे और एक प्रकार से उनके अभिभावक थे। उन्हीं की शागिर्दी में लखनऊ की ज़बान, यहाँ के रस्म–रिवाज, तर्ज़–ए–मुशाबरत (बातचीत का सलीका) तथा तमद्दुन (नागरिकता) के निक़ात (सूक्ष्म बातें) 'सरशार' में इस तरह दिलनशीं (दिल में बैठ गये) हो गये जैसे आज के युग में कम्प्यूटर की फ्लापी। इसी कारण बहुत ही कम समय में सरशार साहब ने अपनी बेबाक भाषा और किसी घटना को बयान करने का अनूठा अन्दाज और लहज़े की वजह से उर्दू अदब की दुनियाँ में अपना सिक्का जमा लिया।

मुंशी नवलकिशोर ने जब सन् 1858 में लखनऊ से 'अवध अखबार' का प्रकाशन प्रारम्भ किया तो सरशार साहब की रचनाएँ उसमें नियमित रूप से प्रकाशित होने लगीं जिन्हें पाठक बड़े चाव और उत्सुकता के साथ पढ़ते थे। आप सन् 1878 के आसपास मुंशी नवलकिशोर के आग्रह पर 'अवध अखबार' के सम्पादक बन गये और आपने उसको अपनी प्रभावशाली लेखनी द्वारा बुलन्दियों पर पहुँचा दिया और मुंशी नवलकिशोर को मालामाल कर दिया। आप फ़रमाते हैं –

**ज़ुबां वो पायी कि ले नुत्क़ सैकड़ों बोसे**
**तबीअत ऐसी मिली शोख़ जैसे चंचल नार**
**वही है तू कि तेरे फ़ैज़े खुशबयानी से**
**नवलकिशोर ने पैदा किये पचास हज़ार**

आपके उपन्यास 'फ़साना–ए–आज़ाद' ने आपको अमर बना दिया। सन् 1892 में मुंशी नवलकिशोर के आकस्मिक निधन के पश्चात् राजा किशन प्रसाद के निमंत्रण पर सरशार साहेब लखनऊ से हैदराबाद चले गये। अधिक मदिरापान के कारण उनका यकृत एकदम बेकार हो गया और सन् 1903 में हैदराबाद में एक लम्बी बीमारी के बाद उर्दू उपन्यास–कला की नींव रखनेवाले 'सरशार' का निधन हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में राजनीतिक चेतना का जागरण हुआ जिसके परिणामस्वरूप 1885 में इंडियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना हुई। इस राजनीतिक संगठन को भारत के लगभग सभी भागों में समर्थन मिला और हर प्रान्त के प्रतिभाशाली व्यक्ति इसमें सम्मिलित हुए। लखनऊ में इस संस्था के प्रमुख नेताओं में पंडित बिशननारायण दर का स्थान पहली पंक्ति में था। वे इतने योग्य और प्रतिभाशाली थे कि शीघ्र ही उनकी गिनती अखिल भारतीय नेताओं में की जाने लगी। वास्तव में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में लखनऊ के कश्मीरी पंडित समाज के वे सबसे प्रसिद्ध, सुपठित, विचारक और देशभक्त सदस्य थे।

पं0 बिशननारायण दर बड़े साहसी और क्रान्तिकारी व्यक्ति थे। कैनिंग कालेज के अध्यापक प्राणनाथ बजाज की प्रेरणा से सन् 1884 में केवल 20 वर्ष की आयु में पंडित बिशननारायण दर बिरादरी की परम्परा के विरुद्ध समुद्र- यात्रा करके कानून की शिक्षा ग्रहण करने के लिए लन्दन चले गये जिसके कारण कश्मीरी पंडित बिरादरी में बवंडर खड़ा हो गया और उसका दो धड़ों– धर्म सभा और बिशन सभा में विभाजन हो गया। पंडित बिशननारायण दर जब सन् 1887 में लन्दन से बैरिस्टर बन कर लौटे तो उन्होंने काँग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण की और अपने को देश की स्वतंत्रता के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों में पूर्णरूप से समर्पित कर दिया। वे लखनऊ के एकमात्र नागरिक थे जिनको सन् 1911 में कांग्रेस पार्टी के कलकत्ता में आयोजित अधिवेशन में अध्यक्ष चुने जाने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 1914 में वाइसराय की इम्पीरियल कौंसिल के सम्मानित सदस्य बने। पंडित बिशननारायण दर अत्यन्त कुशल वक्ता और लेखक थे। उन्होंने अनेक विषयों पर पुस्तकें लिखीं। आश्चर्य और खेद की बात है कि इस महान् देशभक्त, उच्चकोटि के शायर, विचारक और राजनीतिक नेता का, जिसने अपना सारा जीवन देश को समर्पित कर दिया, उसके अपने नगर में कोई स्मारक नहीं है।

पंडित बिशननारायण दर 'अब्र' उपनाम से शायरी भी करते थे। आपको ब्राह्मण होने पर बड़ा नाज़ था। आप फ़रमाते हैं –

**''छोटे बड़े फ़कीरों अमीरों मर्दोज़न**
**सबके दिलों में चश्म–ए–ईमान था मोअज़्ज़न**
**कहते थे तन से जान छूटे जान से बदन**
**लेकिन किसी तरह न मिटे नामे बिरहमन''**

एक बार एक मुशायरे के सिलसिले में आप दिल्ली गये और वहाँ की कई ऐतिहासिक इमारतें देखीं। आप जब कुतुबमीनार पर चढ़कर दिल्ली का नज़ारा ले रहे थे तो आपके एक साथी ने पूछा पंडित साहब क्या देखा ? आपका उत्तर था –

**''दुनिया की अजीब हमने हस्ती देखी**
**पहुँचे जो बुलन्दी पे तो पस्ती देखी**
**मीनार–ए–कुतुब से हमने डाली जो निगाह**
**उजड़ी हुई दिल्ली की भी बस्ती देखी।''**

लखनऊ के अनेक कश्मीरी पंडित थियोसाफिकल सोसाइटी की ओर आकर्षित हुए और उसकी गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगे। भारत में इस संस्था को गठित करने का काम डा0 एनी

बेसेंट ने किया जो 1893 में भारत आयी थीं। थियोसाफी के अतिरिक्त भारत के सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक उन्नति में उनकी बड़ी रुचि थी जिसके लिए उन्होंने जीवनभर प्रयत्न किया। उन्होंने 1898 में बनारस में सेंट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना करके शिक्षा की प्रगति को नई दिशा दी। डा0 बेसेंट ने महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया और उनके आग्रह पर पंडित सूरजनारायण बहादुर, पंडित श्याममनोहर नाथ शर्गा, पंडित बिशननारायण दर, पं0 रामनाथ तंखा तथा कुछ अन्य गण्यमान्य कश्मीरी पंडितों ने धन एकत्र करके सन् 1904 में कश्मीरी मुहल्ले में लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल की स्थापना की। सन् 1908 में लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड के तत्कालीन प्रशासनिक अधिकारी पंडित महाराज नारायण चकबस्त के कहने पर यह स्कूल लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड को दे दिया गया जो आज तक इस स्कूल को चला रहा है। आश्चर्य की बात है कि 103 वर्ष पुराना लड़कियों का यह ऐतिहासिक विद्यालय आज तक डिग्री कालेज नहीं बन सका। पता नहीं किस आधार पर लखनऊ नगर महापालिका नगर से मीलों दूर इस्माइलगंज में करोड़ों रुपये व्यय करके लड़कियों के लिए डिग्री कालेज बनवा रही है। यह नगर विकास का एक बिलकुल नया स्वरूप है जिसे समझ पाना कठिन है। डॉ0 ऐनी बेसेंट ने कश्मीर के श्रीनगर में सन् 1905 में श्री प्रतापसिंह हिन्दू कालेज की स्थापना की जिसमें अध्यापन कार्य के लिए उन्होंने सन् 1907 में लखनऊ के पंडित चाँदनारायण बहादुर को भेजा और सन् 1909 में प्रो0 इकबालकृष्ण शर्गा को उसका प्रिंसिपल बनाया।

सन् 1920 में जब डॉ0 सर तेज बहादुर सप्रू के प्रस्ताव पर कैनिंग कालेज को लखनऊ विश्वविद्यालय में परिवर्तित किया गया तो वहाँ के कश्मीरी पंडित अध्यापक विश्वविद्यालय के शिक्षक बने जैसे पंडित जगमोहननाथ चक, डॉ0 आनन्दनारायण चक, प्रो0 प्रकाशनारायण हरकौली, प्रो0 प्रद्युम्न कृष्ण कौल, प्रो0 प्रमोदनारायण मुट्टू आदि। पंडित जगतनारायण मुल्ला को लखनऊ विश्वविद्यालय का कुलपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ, वहीं पं0 ब्रजनाथ शर्गा विश्वविद्यालय की कोर्ट और कार्य परिषद के सदस्य बने जिनके प्रयासों से न केवल विश्वविद्यालय का गौरवपूर्ण विकास हुआ अपितु विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना सम्भव हो सकी।

लखनऊ के कश्मीरी पंडित समाज में एक महान् सन्त भी हुए हैं। वे हैं पंडित शिवप्रसाद चौधरी। वे अपने जीवन काल के आरम्भिक दौर में सरिश्तेदार रहे। उनकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी थीं। उनके भरी जवानी में आकस्मिक निधन पर वे इतने अधिक विचलित हुए कि अपना घर द्वार छोड़कर घोर तपस्या करने हिमालय पर्वत चले गये और एक महान् संत बन गये जिनको उनके भक्तगण खटखटा बाबा के नाम से पुकारने लगे। वे इटावा जनपद में जमुना नदी के तट पर एक कुटिया बना कर रहते थे और प्रतिदिन जमुना नदी पर चल कर उस पार स्नान और ध्यान करने जाते थे। उनके अनेक आश्चर्यचकित कर देने वाले कारनामे प्रसिद्ध हैं। हजारों श्रद्धालु प्रतिवर्ष उनकी समाधि स्थल पर अपनी आस्था प्रकट करने के लिए जाते हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कश्मीरी पंडित समाज के आदर्श पुरुषों ने जो रास्ता दिखाया उस पर यह समाज आगे भी चलता रहा।

पंडित बिशननारायण दर से प्रेरणा लेकर कई कश्मीरी पंडित नवयुवक बैरिस्टर बनने के लिए लन्दन गये जिनमें पंडित ब्रजेन्द्रनाथ शर्गा, पंडित इकबालनारायण मसलदान, पंडित मनमोहननाथ चक व उनके भाई पंडित कैलाशनाथ चक प्रमुख हैं। पंडित ब्रजेन्द्रनाथ शर्गा की लन्दन में सन् 1904

में एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी और उनका वहीं दाह संस्कार कर दिया गया। उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त होने से पूर्व सेन्ट्रल हिन्दू कालेज में कश्मीरी पंडित छात्रों की उचित शिक्षा के लिए डॉ0 एनी बेसेंट को 10ए000/– रुपये दान दिये। डॉ0 एनी बेसेंट ने उनकी स्मृति में कालेज के प्रांगण में एक भव्य शर्गा हाल का निर्माण कराया।

लखनऊ के सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में कश्मीरी पंडित समाज अपना योगदान बराबर करता रहा। जब लखनऊ में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की गयी तो पंडित ब्रजनाथ शर्गा को उसका अध्यक्ष चुना गया जिसके माध्यम से उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किये। अमन सभा तथा बाद में कांग्रेस के सदस्य तथा बाबा हजाराबाग की समिति के सचिव बने। वे प्रदेश में सरकार द्वारा मन्दिरों की देख–रेख के लिए गठित ट्रस्ट के भी सचिव थे। प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री चन्द्रभानु गुप्त उनको अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। पंडित ब्रजनाथ शर्गा ने स्वामी रामतीर्थ और महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र लिखे।

रायबहादुर पंडित श्याममनोहर नाथ शर्गा ने सन् 1918 में अपने संसाधनों से क्षेत्र की जनता के मनोरंजन के लिए एक अनूठा पार्क विकसित कराया। कश्मीरी मुहल्ले का यह शर्गा पार्क कभी गंगा–जमुनी तहज़ीब का एक अद्भुत नमूना हुआ करता था। अब नगर महापालिका की व्यवस्था में इस ऐतिहासिक पार्क की शोभा और गौरव नष्ट हो चुके हैं।

सन् 1920 के अवज्ञा आन्दोलन के पश्चात् महात्मा गाँधी राष्ट्रीय फलक पर एक जननेता के रूप में उभरे। उन्होंने पं0 जवाहरलाल नेहरू को अपना उत्तराधिकारी बनाया जिनके आवाहन पर लखनऊ के अनेक कश्मीरी पंडितों ने सक्रिय राजनीति में भाग लेना प्रारम्भ किया। इनमें प्रमुख थे पंडित रामनाथ बाँचू, डॉ0 मदन अटल, पं0 ब्रजकृष्ण गुर्टू, श्रीमती शिवराजवती नेहरू, श्रीमती धनराजपती बक्शी, डॉ0 कैलासनाथ कौल तथा श्रीमती शान्ति भट। उल्लेखनीय है कि श्रीमती बख्शी लखनऊ ज़िला परिषद की पहली महिला अध्यक्ष चुनी गयीं। आजादी के पूर्व पं0 जवाहरलाल नेहरू उन्हीं के घर पर ठहरते थे। चीन और जापान के मध्य युद्ध प्रारम्भ होने के पश्चात् घायल चीनी सैनिकों के उपचार के लिए पं0 जवाहरलाल नेहरू के निर्देश पर डॉ0 मदन अटल के नेतृत्व में डाक्टरों का एक दल चीन गया जिसमें डॉ0 द्वारिकानाथ कोटनीस भी शामिल थे। प्रसंगवश यह बताना अनुचित न होगा कि इन्हीं की एक चीनी युवती से प्रेमकथा के आधार पर अपने ज़माने की प्रसिद्ध फिल्म 'डॉ0 कोटनीस की अमर कहानी' बनी थी। डा0 मदन अटल को चीन में बहुत सम्मान मिला और उनकी स्मृति में वहाँ एक अस्पताल का निर्माण भी किया गया।

गाँधी जी की विचारधारा से प्रभावित होनेवाले कश्मीरी पंडितों में एक विशेष नाम पं0 पृथ्वीनाथ चकबस्त का है। वे पहले नौकरी के उद्देश्य से कलकत्ते चले गये फिर वहाँ पानी के जहाज़ द्वारा दक्षिण अफ्रीका चले गये जहाँ गाँधी जी के साथ उन्होंने अश्वेतों के लिए काफी कार्य किया। सन् 1920 के आसपास वे पुनः भारत वापस आकर अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने लगे। वह बहुत ही सादगी के साथ रहते थे। उनके अनुज पं0 त्रिलोकीनाथ चकबस्त गर्म विचारधारा के व्यक्ति थे। वे सुभाषचन्द्र बोस को अपना आदर्श मानते थे और उनके आवाहन पर देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से बर्मा चले गये जहाँ उन्होंने कुछ वर्ष इण्डियन नेशनल आर्मी में कार्य किया। बाद में वे भारतीय सेना में भर्ती हो गये थे।

कश्मीरी पंडित समाज भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में तो रुचि ले ही रहा था, अंग्रेज़ सरकार भी प्रशासनिक कार्यों में उसके प्रतिभाशाली सदस्यों का उपयोग करती थी।

जब अंग्रेज़ों ने प्रथम बार संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में प्रयोग के तौर पर दो भारतीयों को सरकार का मंत्री बनाया तो उनमें एक थे पं0 जगतनारायण मुल्ला जिन्होंने पं0 इकबालनारायण गुर्टू को अपना पार्लियामेन्टरी सचिव नियुक्त किया। परन्तु अमृतसर में जलियाँवाला कांड हो जाने के पश्चात् पं0 जगतनारायण मुल्ला ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। पं0 इकबालनारायण गुर्टू 1935 से 1939 के बीच इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। बाद में पं0 मदन मोहन मालवीय उन्हें वाराणसी ले गये और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रोवाइस चान्सलर बना दिया। उस समय डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् वहाँ वाइस चान्सलर थे।

सन् 1911.12 में लखनऊ में मेडिकल कालेज आरम्भ होने के साथ कश्मीरी पंडित नवयुवकों को अपनी प्रतिभा दिखाने का एक क्षेत्र और मिल गया। चिकित्सा के क्षेत्र में डॉ0 श्यामनाथ चक ने किंग जार्ज मेडिकल कालेज की एम0बी0बी0एस0 परीक्षा में सब विषयों में सबसे अधिक अंक प्राप्त करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया जो रिकार्ड आज भी कायम है। उन्होंने भारत में प्रथम बार हृदय की शल्य क्रिया की। डॉ0 तेजनारायण बहादुर और डॉ0 हरिहरनाथ हुक्कू जैसे कुशल चिकित्सकों के नाम चिकित्सा के क्षेत्र में आज भी लोग याद करते हैं। डॉ0 तेजनारायण बहादुर छः महीने लखनऊ में और छः महीने विलायत में अपनी प्रैक्टिस करते थे। उनके पास एक फोर्ड कार थी जो सारे नगर में पहचानी जाती थी। डॉ0 किशनलाल नेहरू एडिनबर्ग विश्वविद्यालय से एम0बी0सी0एच0बी0 की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् किंग जार्ज मेडिकल कालेज के सुपरिन्टेन्डेन्ट बने।

बीसवीं शताब्दी में लखनऊ के शायरों में पं0 ब्रजनारायण चकबस्त का नाम पहली पंक्ति में रखा जाता है। उनका जन्म 19 जनवरी, 1882 को फैज़ाबाद में हुआ था परन्तु उनकी शिक्षा–दीक्षा लखनऊ में हुई। उन्होंने 1907 में एलएल0बी0 पास करने के बाद वकालत आरम्भ की। आपने कम उम्र में ही शायरी करना शुरू कर दिया। आपने उस समय की उर्दू शायरी की अनेक परम्पराओं को तोड़ा और बिना कोई उपनाम रखे शायरी की –

**ज़िक्र क्या आयेगा बज़्म–ए–शोरा में अपना**
**मैं तख़ल्लुस का भी दुनियाँ में गुनहगार नहीं**

आपने उर्दू शायरी को अपने दिमाग़ के अनुसार एक नया रंग दिया और उस समय की शायरी से हटकर अपनी एक अलग पहचान बनायी। उन्होंने रामायण का गहन अध्ययन किया और उसका सरल उर्दू भाषा में बहुत सुन्दर रूप में रूपान्तरण किया। उदाहरण के रूप में कौशल्या से बिदा लेते हुए श्रीराम का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया –

रुखसत हुआ वो बाप से लेकर ख़ुदा का नाम
राहे वफ़ा की मंज़िलें अहल हुई तमाम
मंज़ूर था जो मां की ज़ियारत का इन्तिजाम
दामन से अश्क पोंछ के दिल से किया सलाम

इज़हार बेबसी से सितम होगा और भी
देखा हमें उदास तो ग़म होगा और भी

चकबस्त साहब को मुशायरों में भाग लेने और मुशायरे आयोजित करने का बहुत शौक़ था। वह राष्ट्रीय स्तर के मुशायरे कश्मीरी मुहल्ले में नियमित रूप से आयोजित करते थे जिनमें देश के कोने-कोने से शोरा आकर अपना कलाम पेश करते थे। आपका निधन 12 फरवरी सन् 1926 को हृदयगति रुक जाने के कारण हो गया।

अंग्रेज़ी शासन में कश्मीरी पंडितों ने अपनी प्रतिभा के बल पर अनेक महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त किये। रायबहादुर पंडित श्याममनोहरनाथ शर्गा लखनऊ के प्रथम भारतीय ज़िला जज और सन् 1935 में उदयपुर रियासत के मुख्य न्यायाधीश बने। पं0 मोतीलाल नेहरू जब भी इलाहाबाद से लखनऊ आते थे तो फिटन पर बैठकर उनसे मिलने अवश्य आते थे और घण्टों कानून की बारीकियों पर गुफ़्तगू होती थी।

आबकारी विभाग में पंडित कालीसहाय मुल्ला प्रथम भारतीय उप सहायक आयुक्त बने। उनके पौत्र न्यायमूर्ति तेजनारायण मुल्ला तथा न्यायमूर्ति आनन्दनारायण मुल्ला हलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने। न्यायमूर्ति आनन्दनारायण मुल्ला उर्दू के प्रसिद्ध शायर भी थे और लखनऊ से लोकसभा के सांसद् भी रहे।

पं0 हरिहरनाथ मुट्टू आयकर विभाग के प्रथम भारतीय आयुक्त बने। उनके पुत्र पं0 रामेश्वरनाथ मुट्टू केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के चेयरमैन तथा केन्द्रीय वित्तमंत्रालय में उपसचिव रहे।

भारत के प्रथम भारतीय न्यायधीश न्यायमूर्ति शम्भूनाथ पंडित के सुझाव पर अंग्रेज़ों ने पं0 दयाकृष्ण हांगल को उप सहायक आयुक्त बना कर पेशावर भेजा। उनके पौत्र ए0के0 हांगल एक प्रसिद्ध रंगमंच और फिल्मों के चरित्र अभिनेता हैं जिनको राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने सन् 2005 में पद्म विभूषण सम्मान से अलंकृत किया।

जब सर जे0पी0 श्रीवास्तव ने लखनऊ में फिल्म निर्माण के लिए हुसैनगंज में कैलाश स्टूडियो की स्थापना की तो कुछ कश्मीरी पंडितों ने अभिनय के क्षेत्र में भी अपने हाथ अज़माने की चेष्टा की। लखनऊ में निर्मित फिल्म ''दो चोर'' में राजगुरु पं0 राजनाथ रुग्गू तथा पं0 रामचन्द्रनारायण तिक्कू ने भाग लिया। यशोधरा काटजू और आशा तिक्कू फिल्म अभिनेत्रियाँ बनने के लिए लखनऊ से मुम्बई चली गयीं पर उस समय तक सम्भ्रान्त परिवारों में यह सब बहुत अच्छा नहीं माना जाता था।

पं0 ब्रजकृष्ण कौल 'बेखबर' ने सारे कश्मीरी पंडित शायरों के कलाम को एक जगह एकत्रित कर प्रकाशित करने की योजना बनाई जो वास्तव में एक बहुत कठिन कार्य था। पर जब किसी भी व्यक्ति का इरादा पक्का हो और हौसले बुलन्द हों तो फिर कोई भी काम कठिन नहीं रह जाता है। पं0 ब्रजकृष्ण कौल ने अपने अथक प्रयासों से देशभर के लगभग 350 कश्मीरी पंडित शायरों के कलाम को न केवल एक स्थान पर एकत्रित किया अपितु उसको पंडित जगमोहननाथ रैना 'शौक' के सक्रिय सहयोग से डॉ0 सर तेजबहादुर सप्रू के संरक्षण में दो खण्डों में 'बहार-ए-गुलशन-ए-कश्मीर' शीर्षक से क्रमशः सन् 1931 व सन् 1932 में प्रकाशित कराया। इन बहुमूल्य ग्रन्थों से देश-विदेश के अनेक शोधार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। लखनऊ के तीन विख्यात

कश्मीरी पंडित शायरों दयाशंकर कौल 'नसीम', रतननाथ दर 'सरशार' और ब्रजनारायण चकबस्त पर विदेशों में भी काफी कार्य हुआ है और अनेक पुस्तकें प्रकाशित की गयी हैं।

ब्रिटिश शासन–काल में लखनऊ के कश्मीरी पंडित समाज की चर्चा के प्रसंग में दो परिवारों का परिचय देना आवश्यक है। अंग्रेज़ों ने सन् 1849 में जब पंजाब के अन्तिम शासक महाराजा दिलीप सिंह को हटाकर उन्हें इग्लैंड में नज़रबन्द कर दिया और सम्पूर्ण पंजाब राज्य का अधिग्रहण कर लिया तो पंजाब में बसे अनेक कश्मीरी पंडित परिवारों ने अंग्रेज़ों की गुलामी करना उचित नहीं समझा। वे वहाँ से अन्य स्थानों को पलायन कर गये जिनमें से कुछ लखनऊ में कश्मीरी मुहल्ले में आकर बसे। इनमें प्रमुख पं0 आत्माराम चक और पं0 उमाशंकर काचर का परिवार था।

पं0 आत्माराम चक के पौत्र पं0 पृथ्वीनाथ चक कानपुर के नामी–गिरामी वकील बने और उन्होंने कानपुर नगर के विकास में अभूतपूर्ण योदान दिया। आपने पी0पी0एन0 पोस्ट ग्रेजुएट कालेज तथा पी0पी0एन0 मार्केट की स्थापना की। पं0 मोतीलाल नेहरू और डॉ0 कैलासनाथ काटजू ने आपके संरक्षण में अपनी वकालत प्रारम्भ की। आपके ज्येष्ठ पुत्र बैरिस्टर जगमोहननाथ चक लखनऊ विश्वविद्यालय में लॉ के प्रोफ़ेसर रहे। आपके दूसरे पुत्र बैरिस्टर मनमोहननाथ चक लखनऊ के प्रख्यात वकील और पं0 जगतनारायण मुल्ला के दामाद थे। आपके तीसरे पुत्र बैरिस्टर कैलासनाथ चक इंग्लैण्ड में पं0 जवाहरलाल नेहरू के सहपाठी थे और उनके साथ एक ही कमरे में रहते थे। आपके पौत्र पं0 चन्द्रमोहननाथ चक इंग्लैण्ड से सीनियर रैंगलर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उत्तर प्रदेश के शिक्षा निदेशक बने तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात् लोक सेवा आयोग के सदस्य बने। आपके एक और पौत्र पं0 आनन्द मोहननाथ चक लखनऊ विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफ़ेसर थे। आप आजकल अमेरिका में हैं।

बैरिस्टर मनमोहननाथ चक के सुपुत्र डॉ0 श्यामनाथ चक की चर्चा पहले की जा चुकी है। इस चक परिवार की फ़ानब्रेक एवेन्यू में चार भव्य कोठियाँ थीं जिनमें से एक को प्रसिद्ध गज़ल–गायिका बेगम अख्तर के पति बैरिस्टर अब्बासी ने खरीद लिया था जो अब बेगम अख्तर का स्मारक है।

पं0 दयाशंकर काचर के वंशज पं0 ब्रजमोहननाथ काचर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच के सरकारी स्टैंडिंग कौंसिल बने। आप और आपकी पत्नी श्रीमती गीता काचर कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। आपने सन् 1979 में पं0 बिशननारायण दर की 115वीं जयन्ती बहुत बड़े पैमाने पर स्थानीय रवीन्द्रालय प्रेक्षागृह में मनाई जिसका उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने किया।

पं0 लक्ष्मीनारायण दर कटरा बक्कास के बहुत बड़े जागीरदार थे। आपकी कटरा बक्कास हाउस नाम से कश्मीरी मुहल्ले में एक बहुत ही हलब हवेली थी जिसके फाटक से हाथी निकल जाता था। आपकी जमींदारी को आजकल आपके वंशज मेजर बी0के0 कौल देखते हैं जो आशीष आटोमोबाईल्स के मालिक हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व के युग में कश्मीरी पंडितों को उद्योग–व्यवसाय ने विशेष आकर्षित नहीं किया। सरकारी सेवा, जमींदारी और वकालत उनके प्रमुख पेशे थे। इक्के–दुक्के व्यक्तियों ने ही किसी व्यवसाय में हाथ डाला। ऐसे लोगों में पं0 त्रिलोकीनाथ सोपोरी का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने नया गाँव (माडल हाउस के निकट) अपने पिता की स्मृति में निरंजन प्रिंटिंग प्रेस स्थापित

किया। खेल–कूद के क्षेत्र में उल्लेखनीय नाम पंडित राजनाथ सोपोरी का है जो फुटबाल के राज्यस्तरीय खिलाड़ी थे।

**स्वतंत्रता के बाद** : 1947 में भारत के स्वतंत्र होते ही देश का रूप बदलने लगा। नयी समस्याओं के साथ नयी सम्भावनाओं के दरवाज़े खुलने लगे। भारत के विभाजन के कारण पाकिस्तान से आनेवाले हजारों लोग उत्तर भारत के नगरों में बसने लगे। उधर कश्मीर के एक भाग पर पाकिस्तान का कब्जा हो गया तो एक बार फिर वहाँ से कश्मीरी पंडितों का पलायन होने लगा। कुछ परिवार कश्मीर से सीधे लखनऊ आकर यहाँ बस गये।

स्वतंत्रता के बाद लखनऊ नगर को गौरव प्रदान करनेवाले व्यक्तियों में पहला नाम डा0 कैलाशनाथ कौल और उनके परिवार का है। उन्होंने लखनऊ में राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान स्थापित किया और उसके संस्थापक निदेशक बने। उनको बाग़वानी और साँप पालने का बेहद शौक था। उनके प्रयासों से लखनऊ के प्राणि उद्यान में साँपघर स्थापित हुआ जिसे उन्होंने अनेक प्रकार के रंग–बिरंगे साँप भेंट किये। उन्होंने लखनऊ में प्रथम बार फिल्म सोसाइटी का गठन किया और नगर में फ्लावर शो आयोजित करने की परम्परा का सूत्रपात किया। उन्हें बागबानी का बेहद शौक था और वे मजाक में अपने को माली कहा करते थे। लखनऊ नगरवासियों में बागवानी की रुचि पैदा करने के लिए उन्होंने 'गार्डेन लवर्स सोसाइटी'की स्थापना की। उनकी पत्नी श्रीमती शीला कौल पहले सभासद फिर लखनऊ की सांसद चुनी गयीं तथा केन्द्र सरकार की मंत्री बनी। उनके प्रयासों से लखनऊ में दूरदर्शन केन्द्र, इन्जिीनियरिंग कालेज तथा भारतीय प्रबन्धन संस्थान स्थापित हुए। उनके पुत्र पं0 गौतम कौल एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी बने और इण्डोतिब्बत बार्डर पुलिस के महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए। यह कम लोगों को ज्ञात है कि वे एक जाने–माने फिल्म समालोचक हैं। आपने भारतीय सिनेमा के इतिहास पर एक शोधपरक पुस्तक लिखी है। डॉ0 कैलाशनाथ कौल की पुत्री श्रीमती दीपा कौल प्रदेश सरकार में सांस्कृतिक कार्य मंत्री रहीं।

लखनऊ के शैक्षिक, साहित्यिक और राजनीतिक जीवन में श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी का विशेष स्थान है। वे काफ़ी लम्बे समय तक नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कालेज की प्राचार्य रहीं तथा लखनऊ मध्य क्षेत्र से विधान सभा की सदस्य चुनीं गयीं। वे प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री रहीं और उनको शिक्षा और गृह विभाग का जिम्मा सौंपा गया। वे काफ़ी लम्बे समय से हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहीं हैं। उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसके लिए हिन्दी संस्थान ने उनको सम्मानित और पुरस्कृत किया है। हिन्दी कहानी–लेखन के क्षेत्र में उन्होंने पर्याप्त ख्याति प्राप्त की है।

पं0 रामचन्द्र तकरू लखनऊ के जिलाधीश रहे तथा बाद में गृह सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए। पंडित प्रतापकृष्ण कौल केन्द्र सरकार में कैबिनेट सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए तथा उसके पश्चात् अमरीका में भारत के राजदूत बने। उनके अनुज एयरमार्शल स्वरूपकृष्ण कौल भारतीय वायुसेनाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए। सन् 1965 और सन् 1971 के भारत–पाक युद्ध के समय आपने अदम्य साहस का परिचय दिया जिसके लिए उन्हें परमवीरचक्र से अलंकृत किया गया।

डॉ0 मोतीलाल धर केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के निदेशक बने तथा सेवानिवृत्त होने के पश्चात् बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति बने। डॉ0 त्रिलोकीनाथ खुशू राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के निदेशक तथा भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय में सचिव रहे। पं0

त्रिलोकीनाथ धर प्रदेश सरकार के कई विभागों के प्रमुख सचिव तथा उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष रहे। आपने विभिन्न विषयों पर लगभग 41 पुस्तकें लिखी हैं। आपकी पुत्री कुमकुम धर कथक की एक अन्तर्राष्ट्रीय नृत्यांगना हैं और आजकल भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय में कथक विभाग की डीन हैं।

पं0 ब्रजलाल चक प्रदेश के कई मुख्यमंत्रियों के सचिव रहे। बाद में वे अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह के मुख्य आयुक्त बनाये गये। पं0 शिवनन्दनलाल दर बोर्ड आफ रेवन्यू के चेयरमैन रहे। डॉ0 श्रीधर नेहरू कुछ समय तक इसके सदस्य रहे।

पं0 पूरन प्रकाश तिक्कू काफ़ी लम्बे समय तक उत्तर प्रदेश सरकार के चीफ़ पायलेट रहे और बड़े दिग्गज नेताओं को हवा में सैर कराते रहे। उन्होंने कई एयरशोज़ में अपने हैरतअंगेज़ करतब भी दिखाये। उनकी पत्नी श्रीमती कामिनी तिक्कू काफ़ी समय तक रेडियो सीलोन की उद्घोषिका रहीं और अपनी आवाज़ के जादू से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करती रहीं। उन्होंने मुज़फ्फर अली की फिल्मों 'अंजुमन', 'आगमन' और 'उमराव जान' में अभिनय भी किया। उनके सुपुत्र डॉ0 असीम प्रकाश तिक्कू आजकल किंग जार्ज दन्त विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं।

पं0 विवेकनारायण चन्ना जल संस्थान के महानिदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए। पं0 पृथ्वीनाथ धर हिन्दोस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड के मुख्य अभियन्ता रहे। पं0 विजयकुमार रैना ने न केवल निदेशक के रूप में ज़ूलाजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया में महत्त्वपूर्ण कार्य किया अपितु कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए अन्टार्टिका द्वीप समूह की यात्रा की और हिमनदों पर अनेक शोध पत्र प्रकाशित किये। उनकी पत्नी श्रीमती मोहनी रैना ला मार्टिनीयर कालेज में अध्यापक रहीं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कश्मीरी पंडितों ने अपना स्थान बनाये रखा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में प्रो0 केवलकृष्ण कौल तथा प्रो0 नरेन्द्रकृष्ण जुत्शी और विधि विभाग में प्रो0 राजदुलारी कौल अध्यापन एवं शोध कार्य कर रहे हैं।

पं0 अवतारकृष्ण गंजू लखनऊ के कदाचित् प्रथम कश्मीरी पंडित थे जिन्होंने प्रीमियर मोटर्स में मैनेजर के पद पर कार्य करते हुए शौकिया 1930 के दशक में रंगमंच पर कार्य करना प्रारम्भ किया। उन्होंने अभिनय, निर्देशन और लेखन के साथ-साथ रंगमंच से जुड़ी अन्य विधाओं जैसे मंच-निर्माण, रूप-सज्जा तथा वेशभूषा में भी काफ़ी दक्षता प्राप्त की। उनको इस दौर में प्रसिद्ध फिल्म संगीतकार नौशाद अली के साथ भी कार्य करने का सौभाग्य मिला जो लाटूश रोड पर स्थित अपनी हारमोनियम की दुकान पर काम करते थे। वे रफ़ा-ए-आम क्लब के सामने इनके द्वारा निर्देशित नाटकों का पूर्वाभ्यास देखने आते थे और नाटक के प्रदर्शन को सफल और प्रभावशाली बनाने के लिए अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव देते थे। उस समय सिटी स्टेशन के सामने वाले स्थल पर पंडाल लगाकर और खुला मंच बनाकर नाटक मंचित किये जाते थे।

लखनऊ को गौरव प्रदान करने वाले व्यक्तियों में बहुचर्चित फ़िल्म अभिनेता, निर्देशक, सेंसर बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष तथा पद्म श्री के अलंकरण से सम्मानित अनुपम खेर भी हैं जो लखनऊ की भारतेन्दु नाट्य अकादमी में प्राध्यापक तथा रंगमंच पर सक्रिय रहे।

पं0 ब्रजनाथ शर्ग़ा के अनुज पंडित ज्योतिनाथ शर्ग़ा रेलवे में गार्ड थे। आपकी पुत्री सुश्री मीरा शर्ग़ा का नाम 50 के दशक में रंगमंच तथा आकाशवाणी में बहुत चर्चित था। आप विवाह के पश्चात्

श्रीमती मीरा बक्शी बनीं। आप और अमेरिका में शिक्षित आपके सुपुत्र राजीव बक्शी लखनऊ के सआदत गंज क्षेत्र में स्थित कश्मीरी बाग़ में दो अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों का बड़ी कुशलता से संचालन कर रहे हैं।

प्रो0 पृथ्वीनाथ कौला ने मद्रास विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी साइंस विषय के जनक डॉ0 रंगनाथन से शिक्षा–दीक्षा लेकर इस विषय को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता दिलायी और उस सम्बन्ध में अनेक देशों का भ्रमण किया। उनके नाम से लाइब्रेरी साइंस विषय में प्रतिवर्ष उत्कृष्ट कार्य के लिए जाने–माने व्यक्तियों को पुरस्कृत किया जाता है। उनको शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सन् 2004 में पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया गया।

लखनऊ के शर्गा परिवार के रायबहादुर डॉ0 उमाशंकर शर्गा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वनस्पति विज्ञान में एम0एससी0 करने के पश्चात् सरकारी वजीफे पर इंग्लैण्ड चले गये। वहाँ के एडिनवर्ग विश्वविद्यालय से पीएच0डी0 की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् उच्च शोध कार्य करने के लिए अमरीका की कार्नेल विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। भारत वापस आने पर वह कानपुर के एग्रीकल्चर कालेज के प्रोफेसर बने तथा आगरा विश्वविद्यालय में डीन रहे। उन्होंने प्रदेश में रेशम उद्योग के क्षेत्र में बहुत ही उच्च स्तर का मौलिक शोध कार्य किया जिससे प्रदेश के रेशम उद्योग को बहुत अधिक लाभ हुआ। उनके छात्र देश के अनेक प्रतिष्ठित शोध संस्थानों के निदेशक नियुक्त हुए।

वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में अपने योगदान द्वारा यश प्राप्त करनेवालों में डा0 अमृतनाथ शर्गा का भी विशेष स्थान है। वे राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के उपनिदेशक नियुक्त हुए। उन्होंने वाटिका विशेषज्ञ के रूप में बड़ी ख्याति पायी है। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में दिल्ली में बने शक्ति स्थल के बगीचे को विकसित करने का श्रेय उन्हें ही है। आपने अनेक निजी और सार्वजनिक संस्थाओं के बगीचों की योजना बनायी और उन्हें विकसित किया। आपने इस विषय की एक शोधपरक पुस्तक भी लिखी है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शिक्षा के क्षेत्र में कई कश्मीरी पंडितों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पं0 मनोहरलाल जुत्शी राजकीय जुबिली कालेज के प्रिंसिपल बने और पं0 चाँदनारायण हांगल राजकीय ट्रेनिंग कालेज के प्रिंसिपल नियुक्त हुए। पं0 सूरजनाथ किचलू, पं0 ओंकारनाथ शर्गा, पं0 चन्द्रमोहन नाथ चक ने शिक्षा निदेशक के पद को सुशोभित किया।

व्यापार के क्षेत्र में कश्मीरी पंडितों को बहुत अधिक सफ़लता नहीं मिली। अंग्रेज़ों के शासनकाल में अमीनाबाद व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था जिसमें पं0 कैलाशनाथ सोपोरी ने पार्क एण्ड कम्पनी नाम से अंग्रेज़ी दवाओं की एक दुकान खोली वहीं पं0 जगमोहननाथ कौल ने जान एण्ड कम्पनी नाम से सिगार और सिगरेट की एक थोक व्यापार की एजेन्सी प्रारम्भ की। पर दोनों व्यक्तियों को किन्हीं कारणों से अपने व्यवसाय में बहुत अधिक सफ़लता नहीं प्राप्त हो सकी। पं0 जगमोहननाथ कौल काफी लम्बे समय तक अमीनाबाद ट्रेडर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। उनके पुत्र अमरनाथ कौल नगर के एक मशहूर पतंगबाज़ हैं और पतंगों की प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा पेंच काटने के लिए देश के अनेक प्रदेशों में जाते हैं। उनके पास लगभग 50॰000 विभिन्न आकार और प्रकार की पतंगों का विशाल भण्डार है और उनका प्रदेश में प्रथम पतंगों का संग्रहालय खोलने का विचार है जिसके द्वारा नवयुवकों को पतंगों के विकास और इतिहास के बारे में उचित

जानकारी दी जा सके। व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश करनेवाले कुछ अन्य लोग भी थे। पंडित अमरनाथ काचरू ने लालबाग में 'ओशन सर्जिकल्स' नाम से एक शोरूम खोला। पंडित माखनलाल रैना ने काफी समय हजरतगंज में सर्वप्रिय भोजनालय चलाया। उनके पुत्र अमरेश रैना आजकल इन्दिरानगर में सत्कार रेस्टोरेंट चला रहे हैं।

पं0 रामेश्वरनाथ काव भारतीय खुफ़िया तंत्र रॉ के संस्थापक–निदेशक बने। आप प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के खुफ़िया तंत्र के मामलों में सलाहकार रहे। आपने सन् 1971 के भारत–पाक युद्ध में बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी जिसके कारण एक नये राष्ट्र बांग्लादेश का विश्व के मानचित्र पर अस्तित्व सम्भव हो सका। वे कुशल शिल्पकार भी थे और अपने रिक्त समय में सुन्दर कलाकृतियों को अपनी शिल्पकला द्वारा सजीव रूप प्रदान कर देते थे।

श्रीमती शान्ति भट माडल हाऊस क्षेत्र से लखनऊ नगर महापालिका की सभासद रहीं। आपके प्रयास से नगर के इस क्षेत्र में पंडित प्रेमशंकर शर्गा मार्ग का निर्माण सम्भव हो सका। आपके पति पं0 पुष्करनाथ भट एक प्रतिष्ठित वकील तथा समाजसेवी रहे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में काफ़ी कार्य किया। वह लखनऊ विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के सदस्य थे तथा नगर की अनेक शिक्षण संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आपके पूर्वजों ने नवाबी युग में कटरा बिजनबेग में पंचमुखी शिवाले का निर्माण कराया। इस शिवाले की देखभाल आजकल पं0 चन्द्रशेखर दुबे करते हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में पं0 सोमनाथ सप्रू पायनियर के सम्पादक रहे, पं0 अमरनाथ सप्रू ने एक लम्बे समय तक पी0टी0आई0 में कार्य किया। सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे पायनियर और नेशनल हैरल्ड में अवैतनिक रूप से कार्य करते रहे। उनकी पुत्री श्रीमती संगीता बकाया आजकल पी0टी0आई0 में कार्यरत हैं। पं0 अर्जुन शर्गा ने नेशनल हेरल्ड तथा नार्दन इण्डिया पत्रिका में कार्य किया। वे आजकल पायनियर में सेवारत हैं। पं0 अजीत चक पायनियर तथा इण्डियन एक्सप्रेस में थे। उनकी पत्नी श्रीमती अनुराधा चक का निराला नगर में अति आधुनिक ए0सी0 मशीनों से सुसज्जित जिम है जहाँ पुरुष और महिलाएँ अपने को चुस्त तथा आकर्षक बनाने के लिए व्यायाम करते हैं। वे ''लखनऊ टाक'' नाम से एक पाक्षिक पत्रिका का सम्पादन भी कर रही हैं।

पं0 मनमोहनकृष्ण चकबस्त काफ़ी लम्बे समय तक लखनऊ नगर महापालिका के प्रशासक रहे। वे सिगार पीने के काफ़ी शौकीन थे और मुख्यतौर पर हवायन सिगार पसन्द करते थे। उनके पुत्र गोपाल चकबस्त लखनवी तहज़ीब की एक जीती जागती मिसाल हैं तथा पुत्री उमा चकबस्त आकाशवाणी के उर्दू विभाग में सेवारत हैं और उर्दू के प्रचार और प्रसार में पूर्णरूप से संलग्न हैं।

कश्मीरी पंडित समुदाय के सामाजिक जीवन में रुचि लेनेवाले लोगो में पंडित ब्रजकृष्ण गुर्टू का नाम आदरपूर्वक लिया जाता रहेगा। वे पेशे से वकील थे परन्तु अपने समाज की सेवा को अपना कर्त्तव्य समझते थे। पं0 ब्रजनारायण चकबस्त की स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने 'चकबस्त मेमोरियल फंड' की स्थापना की। इसके तत्वावधान में चकबस्त की पुण्यतिथि 12 फरवरी को 'चकबस्त डे' का आयोजन किया जाता था। मेमोरियल फंड से बिरादरी की गरीब और असहाय विधवाओं की आर्थिक सहायता की जाती थी और मेधावी किन्तु आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती थी।

सामाजिक जीवन में विशेष रुचि लेनेवाले अन्य उल्लेखनीय व्यक्ति पंडित प्रतापनारायण बख्शी हैं जो वकालत करते थे और बाद में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने। आपने 1980 में 'अखिल भारतीय कश्मीरी समाज' नामक संगठन की स्थापना की जिससे देशभर के कश्मीरी पंडितों को एक मंच पर लाया जा सके और विचारपूर्वक कुरीतियों को दूर करने के उपाय किये जा सकें।

खेल–कूद के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों से कश्मीरी पंडित, समाज और लखनऊ को गौरव दिलानेवालों में बेडमिंटन के युगल खिलाड़ी प्रकाशनारायण हांगल तथा गोपाल राज़दान और क्रिकेट के चमकते सितारे सुरेश रैना के नाम उल्लेखनीय हैं। संगीत जगत में अपना विशेष स्थान बनाने वाली प्रो0 नरेन्द्रकृष्ण जुत्शी की पुत्री डा0 नूपुर जुत्शी हैं जिन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें सुरसिंगार प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था। उन्होंने पाकिस्तानी गायक गुलामअली के साथ ग़जलें भी गायी हैं।

18वीं और 19वीं सदी में अन्य ब्राह्मणों की तरह कोई भी कश्मीरी पंडित किसी अन्य जाति के व्यक्ति द्वारा पकाया हुआ भोजन ग्रहण नहीं करता था। भोजन को पकाने के लिए हर घर में एक कश्मीरी पंडित रसोइया होता था जो विभिन्न प्रकार के कश्मीरी पकवान और व्यंजन पकाता था। गृहस्वामी तथा अन्य पुरुष सदस्य नहाकर धोती पहन कर रसोई में एक लकड़ी के पटरे पर बैठ कर भोजन ग्रहण करते थे। यह उस कालखण्ड में हर घर की परम्परा और प्रथा थी। शिक्षा के लिए कश्मीरी पंडित छात्र अन्य नगरों में जाते थे और छात्रावासों में रहते थे तब वे अपना भोजन स्वयं पकाते थे अन्यथा बिरादरी से बहिष्कृत हो जाने का भय बना रहता था। लखनऊ के कुछ जाने माने रसोइये जो विवाह या अन्य उत्सवों के अवसर पर खाना पकाते थे, उनके नाम हैं, पं0 नानू भण्डारी, पं0 शिवराम खुशपंज, पं0 नीलकण्ठ खुशपंज, पं0 तोताराम, पं0 गणेश दास, पं0 रघुनाथ, पं0 सोनाराम, पं0 आफताब राम, पं0 गोपालदास, पं0 अमरचन्द, पं0 नन्दराम, पं0 शिवराम और पं0 शिवराम रैना।

लखनऊ नगर में नवाबी दौर तथा बाद में अंग्रेज़ों के शासन काल में कश्मीरी पंडितों के कुल पुरोहितों की एक लम्बी परम्परा रही है जिनका मुख्य कार्य अपने जजमानों के जन्म से लेकर मृत्यु तक समस्त संस्कारों को लौगाक्षी मुनि द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के अनुसार पूरे कश्मीरी विधि विधानों के अनुरूप सम्पादित कराना होता था। ये कुलपुरोहित धर्मशास्त्रों में पूर्ण रूप से पारंगत होते थे और उन्हें ज्योतिर्विज्ञान का भी पूर्ण ज्ञान होता था। वे ग्रह और नक्षत्रों की गणना करके जन्म कुण्डली तैयार करते थे और ग्रहों की कुदृष्टि से बचने के उपाय बताते थे। वे लखनऊ नगर के बाहर अन्य नगरों में बसे अपने जजमानों के यहाँ भी जाते थे। पूजा–पाठ, हवन इत्यादि करना उनके जीवकोपार्जन का मुख्य साधन था। कुछ कुलपुरोहित कश्मीरी पंचांग भी प्रकाशित करते थे। लखनऊ नगर में रहने वाले कुलपुरोहितों में पं0 बिशननाथ खूं खूं पं0 श्यामनाथ कश्यप, पं0 रामनाथ यक्ष, पं0 मनमोहननाथ यक्ष, पं0 त्रिभुवननाथ रुग्गू, पं0 श्यामसुन्दर लंगू, पं0 रामनाथ खूं खूं, पं0 कृष्णनारायण वांटू, पं0 गोकलनाथ वांटू, पं0 ब्रजनाथ खूं खूं, पं0 शम्भूनाथ खूं खूं, पं0 सूरजकृष्ण कल्ला, पं0 बिन्देश्वरनाथ खूं खूं, पं0 रामेश्वरनाथ ज़ाडू, पं0 विशम्भरनाथ वांचू, पं0 कुँवरकृष्ण हुंडू, पं0 चन्द्रशेखरनाथ रेऊ, राजगुरू पं0 राजनाथ रूग्गू, पं0 लम्बोदर तथा पं0 सोमनाथ के नाम प्रमुख हैं।

अब इन कुलपुरोहितों के वंशजों ने अपना पारम्परिक कार्य किन्हीं कारणों से बिलकुल त्याग दिया है। वहीं कुछ ने हीनभावना से ग्रसित होकर अपनी पुरानी पहचान से मुक्ति पाने के उद्देश्य से

अपने पुराने कुल नाम तक बदल कर कार्कुन पंडितों के कुल नाम अपना लिए हैं। यही कुछ हाल भण्डारियों का है जिसके कारण कश्मीरी पंडितों को अपने उत्सव और तीज–त्योहार मनाने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसके लिए आवश्यक है कि लखनऊ कश्मीरी समाज के पदाधिकारी इस दिशा में कोई सार्थक और सकारात्मक पहल करें। युवा पीढ़ी में अपनी संस्कृति को सुरक्षित और संरक्षित रखने के लिए कोई उत्साह नहीं दिखायी दे रहा जिसे पैदा करने की आवश्यकता है।

लखनऊ के कश्मीरी पंडितों के इतिहास का पहला अध्याय अवध के नवाबों के साथ जुड़ा हुआ है। नवाबों के शासन–काल में उन्हें जो सम्मान मिला, वह उनकी योग्यता का सबूत है। उन्होंने भी अपने संरक्षकों के हित का हमेशा ध्यान रखा। ब्रिटिश राज्य का आरम्भ होते ही उन्होंने समझ लिया कि नया ज़माना आ रहा है और उसके अनुरूप उन्होंने तुरन्त तैयारी आरम्भ कर दी। लखनऊ के सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में कश्मीरी पंडितों का अद्वितीय योगदान है। यहीं नहीं, अंग्रेज़ों के समय और स्वतंत्रता के बाद वे हर क्षेत्र में चाहे वह शिक्षा जगत हो, साहित्य हो, राजनीति हो, न्याय–व्यवस्था हो, उर्दू साहित्य हो, प्रशासन हो, राजनय हो या देश की स्वतंत्रता का आन्दोलन हो, कश्मीरी पंडित अपनी प्रतिभा का परिचय देते रहे।

यह बड़े खेद का विषय है कि लखनऊ के पिछले सवा दो सौ वर्ष के इतिहास में इस नगर का गौरव बढ़ाने वाले महान् कश्मीरी पंडितों का नगर में कहीं भी समुचित स्मारक नहीं है। क्या ये अचरज की बात नहीं है कि उर्दू उपन्यास साहित्य की नींव के पत्थर रतननाथ दर 'सरशार', लखनऊ की मशहूर 'मस्नवी' को नया रंग देनेवाले और 'गुल बकावली' के यशस्वी रचनाकार पं0 दयाशंकर कौल 'नसीम', पं0 ब्रजनारायण चकबस्त जैसे श्रेष्ठ शायर, प्रायः सवा सौ वर्ष में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष बनने वाले एकमात्र लखनऊवासी पं0 बिशननारायण दर, इस नगर में राष्ट्रीय वनस्पति शोध संस्थान जैसी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की संस्था को स्थापित करने वाले डा0 कैलासनाथ कौल जैसे कश्मीरी पंडितों के नाम भी आज विस्मृत हो चुके हैं, उन्हें याद रखने का कोई उपाय नहीं किया गया। वास्तव में लखनऊ नगर को गौरव प्रदान करने वाले समुदायों में कश्मीरी पंडितों का विशेष स्थान है, जिसका समुचित आकलन किया जाना चाहिए। लखनऊ की संस्कृति के निर्माण, उसे पहचान देने और उसकी उन्नति में बहुमूल्य अंशदान करनेवाला कश्मीरी पंडित समुदाय इस नगर का एक प्रमुख घटक है।